Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 12, (2017) 123-126

''संस्कृत कवि डॉ0 अशोक कुमार डबराल के 'देवतात्मा हिमालय महाकाव्य' में वर्णित राष्ट्रीय भावना''

ललिता[1*]
[1]संस्कृत विभाग, हे0न0ब0 गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय पौड़ी परिसर,-246001 उत्तराखण्ड

*Corresponding Author Email:lalitarawat429@gmail.com

Received: 09.07.2017; Revised: 25.8.2017; Accepted: 20.10.2017
©Society for Himalayan Action Research and Development

सारांश: प्रस्तुत शोधपत्र में डा0 अशोक कुमार डबराल के देवतात्मा हिमालय महाकाव्य में राष्ट्रीय भावना के विभिन्न पहलुओं (रुपों) का वर्णन किया गया है ।

कुंजी शब्द: डा0 अशोक कुमार डबराल देवतात्मा हिमालय राष्ट्रीय भावना, पुराण, देश, परोपकार, संस्कृति, संस्कृत।

प्रस्तावना

वस्तुतः संस्कृत की वाहिका रही है – हमारी देववाणी संस्कृत। ये संस्कृत का ही प्रताप है कि ये अनादिकाल से भारतीय संस्कृति को समृद्ध करती आ रही है। हम बिना संस्कृत और संस्कृति के राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय एकता की कल्पना नहीं कर सकते। वैदिक ऋषिगण इन्द्र, वरुण तथा बृहस्पति आदि देवताओं की स्तुति राजा तथा प्रशासक के रूप में करते हैं। तथा ऐसा राष्ट्र संकल्प व्यक्त करते हैं कि वे समस्त देवगण राष्ट्र को स्थिर रखे। सच्चरित्र राजा या शासक नेता ही तपस्या तथा ब्रहम्चर्य द्वारा राष्ट्र का सम्वर्धन कर सकता है। इसी प्रकार की भावना अथर्ववेद में व्यक्त की गई है।

'ब्रहम्चर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति' अपि च

''इन्द्रो यां चक्र आत्मनेऽनमित्रां शाचीपतिः सा नो भूमिर्विसृजतां में पयाः''

देश की भूमि, संस्कृति, परम्परा, प्रशासन और सामाजिक तेजस्विता आदि का समन्वित प्रभाव मानव की साधना पर पड़ता है। और उससे जो शक्ति प्रकट होती है उसी का नाम है, राष्ट्रीयता। इसी क्रम में आगे देशभक्ति का भाव जागृत होता है। जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान है। इस भाव को व्यक्त करने वाले संस्कृति जननी जन्मभूमिश्चः स्वर्गादपि गरियशि को सभी आजादी के जन मूल मंत्र मानते हैं। स्वाधीनता के नायकों की संस्कृत पृष्ठभूमि रही है।

संस्कृत साहित्य में हिमालय का गुणगान हर राष्ट्रकवि ने किया है। महाकवि कालिदास से देवतात्मा के रूप में याद करते हैं। –

''अस्तियुत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः

पूर्वापरौ तोयनिधिऽवगाह्य स्थित पृथिव्या इव मानदण्डः''

अनेक कवियों ने भी हिमाद्री को राष्ट्र शौर्य के प्रतीक के रूप में गाया। इन सबके पूर्व भी पुराण साहित्य में भारत राष्ट्र तथा भारत वर्ष में रहने वाले जनता सीमांकित तथा परिभाषित किया गया। विष्णु पुराण के द्वितीय अध्याय में वर्णन मिलता है –

''उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम

वर्ष तद्भरतं नाम भारती यत्र सन्ततिः''

अर्थात जो समुद्र के उत्तर में तथा हिमालय के दक्षिण में स्थित है वह भारत राष्ट्र है। तथा वहां निवास करने वाली जनता भारतीय सन्तान है। प्रायः अनेक पुराणों में देश की ऐसी ही परिभाषाएं दी गई हैं। यथा –

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चितदुख भागभवेत।।''

विश्व के अन्य देश तो भोगभूमि माने गये हैं, जबकि भारत को पुराण, कर्मभूमि कहते हैं। भारतीय जीवन पद्धति स्वर्ग और उपवर्ग(मोक्ष) का साधना मार्ग है। इसलिये देवगण हमेशा भारत वन्दना करते हुए जहां जन्म लेने के लिए तरसते रहते हैं। यथा–

''गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ये भारतभूमि भागे।

स्वर्गापवर्गस्य फलार्जनाय भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्।।''

जब जब असत्य, अन्याय, अधर्म और अव्यवस्था हुई तब तब राम, कष्ण, गौतम तथा गांधी आदि का अवतरण यहॉ हुआ। आज जब अमूल्य व अमर बलिदानों के बाद प्राप्त आजादी के लिए देश के अन्दर और बाहर योजनाबद्ध षडयंत्र चल रहे हैं। तब ऋग्वेद हमारे लिये संगठन सूत्र देते हुए अखण्डता और एकता की ओर अग्रसर करता है। उसका आशय है– हम सब साथ चलें, साथ साथ वार्तालाप करें तथा परस्पर एक दूसरे की बात जानें।–

''संगच्छदवं सं वदध्वं संवोमनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे सञजानानां उपासते।।''

हम सबका हृदय और संकल्प समान हो, भाई भाई से तथा बहन–बहन से द्वेष न करे। अपितु हम उसी तरह पारस्परिक प्रेम करें जैसे गाय नवजात बछड़े से करती है यथा – ''समानि व आकूतिः समाना हृदयानिवः।

समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति।।''

अपि च

''तन्नो वातो मयोभुवातु भेषजं तन्माता पृथिवीतत् पिताद्यौः

तद्ग्रावाण सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रणुतंधिष्ण्या युवम।।''

21वीं शताब्दि के अत्याधुनिक कवि डा0 अशोक कुमार डबराल ने देवतात्मा हिमालय महाकाव्य राष्ट्रीय एकता की भावना से प्रस्फुटित महाकाव्य है। देवतात्मा हिमालय महाकाव्य जहां 21 वीं शताब्दी में लिखा गया एक निःसन्देह विवेच्य काव्य है। वहीं उसकी पौराणिकता भी समस्त ब्रहमांड के मूर्तिमान सौन्दर्य हिमालय को अपने आप में समेटे हुए है। इस काव्य की पौराणिकता, आधुनिकता, राष्ट्रीयता मानवीकरण चित्रण करने की शैली इत्यादि है। जो संस्कृत अध्येताओं को आकृष्ट करती है।

''समस्त भूमौ परमं हि भारतं मनोहरं ज्ञानगुरू महोदयम्

विलोक्य चालोक्य पितामहो मुदा नगाधिराजं कृतवान्नु भारते''

अर्थात समस्त पृथवी पर भारत वर्ष ही पूज्य है, सुन्दर है और महोदय है। यह देखकर और विचार करके मानो ब्रह्मा जी ने पर्वतरात हिमालय को भारत वर्ष में ही बनाया। कवि अपने मन में अनेक प्रकार के विचार करते हैं और कहते हैं

''स्थावरैः जगमैश्चैव संश्लिस्टां प्रकृति द्विधाम्।

अच्छां सुवर्णां सुवर्णां हिमाऽभिख्यां व वर्णय।।''

अर्थात हे भावना स्थावर और जगम दो प्रकार की सृष्टि से सुसज्जित अथवा संयुक्त प्रकृति वाले हिमालय की पारदर्शी, निर्मल, सुकोमल सुन्दर वर्ण वाली सुनहरी शोभा का वर्णन करो। इससे सिद्ध होता है कि कवि को राष्ट्र से कितना प्रेम है। कवि के अनुसार

''कालिदास नस्तुभ्यं चिरञजीवेत यशस्तव

भूमानदण्डरूपेण त्वया यद् स्थापिता हिमः''

अर्थात महाकवि कालीदास आपको हमारा बार – बार नमन है। आपका यश चिरकाल तक जीवित रहे, क्योंकि आपने ही तो हिमालय को पृथ्वी के मानदण्ड के रूप में स्थापित किया। इस पृथ्वी पर हिमालय निश्चय ही स्थिरता, दृढ़ता, गौरव, सुभ्रता एवं पवित्रता का सार्वभौम या सर्वमान्य पैमाना है। संस्कृत कवि डा0 अशोक कुमार डबराल का राष्ट्र के प्रति कितना प्रेम है कि वह पार्वती के समान वर आजकल की बेटियों के लिए कामना कर रहे हैं।

''नगाधिराजात्मजया ध्रुवं यथा पतिर्वृतः सुन्दर दर्शनः शिवः

तथा सुता याप्यविवाहिता पितु वरः वरः प्राप्य भवेत सदा सुखी''

अर्थात जिस प्रकार हिमालय की पुत्री पार्वती सुदर्शन शिव को प्राप्त करके सुखी हुई उसी प्रकार पिता की जो भी अविवाहित बेटी है वह सुन्दर पति को प्राप्त करके सदा सुखी रहे।

''हिमालय येनाधिगतो यथा शिवः परोपकारा भिरतः सुतापति

अलोलुभं यौतककौतुकादिके भजन्तु जामातृजनं तथापरे''

जिस प्रकार हिमालय को परोपकारी निर्लोभी दहेज न मांगने वाला दामाद प्राप्त हुआ उसी प्रकार दूसरे लोगों को जमाता का सुख प्राप्त हो। जब जब सब धर्म की निन्दा करने वाले भूमि पर भारभूत दुर्जन पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। तभी भूत भावन भगवान भारत भूमि में अवतरित होते हैं। कलयुग में त्रिविध तापों से तप्त सामान्य प्राणियों के लिए तथा महापुण्य शैली सज्जनों के लिए भी मेरा यह हिमालय पर लिखा हुआ काव्य परम कल्याणकारी होगा। और समान रूप से मोक्ष दायक भी होगा।

''धनाय भोगाय सुखाय शर्मणे हिताय बोधाय न्यायाय कर्मणे

शमाय धर्माय दमाय चायुषे महार्धकाव्यं सततं सहायकम।।''

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि डा0 अशोक कुमार डबराल के देवतात्मा हिमालय महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग में राष्ट्र हित की भावना है। उनका मानना है कि मेरा यह काव्य धन के लिए, उपभोग के लिए, सुख के लिए, कल्याण के लिए हित के लिए, नीति के लिए, कर्म के लिए शान्ति के लिए, धर्म के लिए, पापों के नाश के लिए और राष्ट्र के लिये सदा सहायक होगा।

सन्दर्भ सूची

1. अथर्ववेद 12/1/10
2. कालिदास कुमार सम्भव
3. विष्णु पुराण द्वितीय अध्याय
4. भविष्य पुराण 3/2/35/14
5. गरुड़ पुराण उत्तर खण्ड 1/6
6. ऋग्वेद 10 वें मण्डल 8 वां अध्याय 191/2
7. ऋग्वेद 4/49/12/12/10
8. ऋग्वेद 1/89/4
9. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य 5/9
10. दे0हि0 म0 5/3

11. दे0हि0म0 11/1
12. दे0हि0म0 11/12

****